Dr. Raj Gopal.
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar

Nyaya: Classification of Perception (Lecture-4)

न्याय: प्रत्यक्ष का वर्गीकरण (व्याख्यान-4)

न्याय दर्शन के अनुसार लौकिक प्रत्यक्ष का एक अन्य प्रकार से विभाजन किया गया है। ये हैं:-

लौकिक प्रत्यक्ष

- निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
- सविकल्पक प्रत्यक्ष
- प्रत्यभिज्ञा

(i) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष:- निर्विकल्पक प्रत्यक्ष उस प्रत्यक्ष को कहते हैं जिसमें केवल वस्तु के अस्तित्व का आभास मात्र होता है। इसमें वस्तु के विशिष्ट गुणों का ज्ञान नहीं होता है, जैसे रस्सी के समक्ष में रस्सी का आभास होता। हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते हैं कि अमुक पदार्थ रस्सी है, केवल इतना आभास होता है कि कोई लम्बा पदार्थ है, यही निर्विकल्पक प्रत्यक्ष का उदाहरण है। इस प्रत्यक्ष में गुण रूप और प्रकार का ज्ञान नहीं होता है। अतः इस प्रत्यक्ष के संबंध में सत्यता और असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है।

(ii) सविकल्पक प्रत्यक्ष:⇒ सविकल्पक प्रत्यक्ष वस्तु का निश्चित और स्पष्ट ज्ञान है। सविकल्पक प्रत्यक्ष में सिर्फ वस्तु के अस्तित्व का ही ज्ञान नहीं रहता है, बल्कि उसके गुणों का भी ज्ञान रहता है। जब हम कलम को देखते हैं तो कलम के अस्तित्व के साथ-साथ उसके गुणों का भी ज्ञान होता है। इसमें वस्तु के आकार के साथ-साथ वस्तु के

Scanned with CamScanner

प्रकार का भी ज्ञान होता है। अतः सविकल्पक प्रत्यक्ष निर्णयात्मक है। इसमें सत्यता असत्यता का प्रश्न उठता है।

सविकल्पक प्रत्यक्ष एवं निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में निम्न अंतर है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में वस्तु के अस्तित्व का आभास मात्र होता है परन्तु सविकल्पक प्रत्यक्ष में वस्तु के अस्तित्व के ज्ञान के साथ-साथ उसके गुणों का भी ज्ञान होता है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में सत्यता असत्यता का प्रश्न नहीं उठता है। परन्तु सविकल्पक प्रत्यक्ष में सत्यता असत्यता का प्रश्न उठता है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष मनोवैज्ञानिक संवेदना के अनुरूप है। सविकल्पक प्रत्यक्ष मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्षीकरण के तुल्य है। इन विभिन्नताओं के बावजूद निर्विकल्पक प्रत्यक्ष सविकल्पक प्रत्यक्ष का आधार है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष के बाद ही सविकल्पक प्रत्यक्ष का उदय होता है।

प्रत्यभिज्ञा (Recognition) :⇒ सविकल्पक प्रत्यक्ष का एक विशेष रूप प्रत्यभिज्ञा है। प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है पहचानना। भूत काल में देखी हुई वस्तु को वर्तमान काल में पुनः देखने पर यदि हम पहचान जाते हैं तो उसे प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। यदि आपको कॉलेज में किसी व्यक्ति से मुलाकात होती है, उसी व्यक्ति को दो साल बाद जब आप उस व्यक्ति को देखकर पहचान जाते हैं। तो यह प्रत्यभिज्ञा कहा जाता है। पहले प्रत्यक्ष की हुई वस्तु को प्रत्यक्ष करके पुनः पहचान लेना प्रत्यभिज्ञा है। प्रत्यभिज्ञा में अतीत और वर्तमान का समन्वय रहता है। जबकि लौकिक प्रत्यक्ष के अन्य भेदों का संबंध केवल वर्तमान से ही रहता है। अतः प्रत्यभिज्ञा वर्तमान इन्द्रिय और पूर्व संस्कार-ज्ञान का सम्मिश्रण होता है।

Scanned with CamScanner